आईआईएम राँची में देश का पहला अंतरविषयक शोध पद्धति केंद्र

INITIATIVES IIM रांची ने रचा इतिहास

IIM रांची में भारत के पहले 'रिसर्च मेथड्स ग्रुप RMG' की शुरुआत

सिटी रिपोर्टर • भारतीय प्रबंधन संस्थान (IIM) रांची ने देश के शैक्षणिक परिदृश्य में एक क्रांतिकारी बदलाव लाते हुए भारत के पहले 'रिसर्च मेथड्स ग्रुप' (RMG) की स्थापना की है। यह संस्थान की ओर से रिसर्च (शोध) की गुणवत्ता को सुधारने और विभिन्न विषयों के बीच की दूरी को खत्म करने की दिशा में एक बड़ी पहल है। अक्सर देखा जाता है कि अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र या पर्यावरण जैसे अलग-अलग विषयों के शोधकर्ता अपने-अपने दायरों में सिमटकर काम करते हैं। IIM रांची का यह नया ग्रुप एक 'साझा मंच' की तरह काम करेगा, जहां नृवंशविज्ञान (Ethnography) और डेटा एनालिसिस जैसी अलग-अलग तकनीकों को एक साथ जोड़ा जाएगा। इससे शोधकर्ताओं को जटिल सामाजिक और आर्थिक समस्याओं के बेहतर समाधान खोजने में मदद मिलेगी। RMG के अध्यक्ष प्रो. कुशाग्र

संस्थान इसके लिए कई विशेष कार्यक्रम चला रहा है

थिंकिंग विद थ्योरी सीरीज़: इसके तहत अब तक 10 सत्र आयोजित किए जा चुके हैं, जहां छात्र और विशेषज्ञ अपने विचारों का आदान-प्रदान करते हैं।

एडवांस वर्कशॉप: हाल ही में आधुनिक शोध पद्धतियों पर 5 दिनों की एक सफल कार्यशाला आयोजित की गई। यह ग्रुप छात्रों को आधुनिक सॉफ्टवेयर, डेटा माइनिंग और रिसर्च की बारीकियों में प्रशिक्षित करेगा। IIM रांची का लक्ष्य इस केंद्र के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाना है।

शरण ने बताया कि इस ग्रुप का विजन रिसर्च के प्रति उत्साह जगाना और भारत को वैश्विक स्तर पर एक रिसर्च हब बनाना है।

Dainik Bhaskar_11.03.2026_P. 4

आइआइएम ने स्थापित किया अनुसंधान पद्धति समूह

जासं, रांची : आइआइएम रांची ने अनुसंधान पद्धति समूह (आरएमजी) की स्थापना कर प्रबंधन अनुसंधान में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। सामाजिक विज्ञान में गहन अनुसंधान, जैसे आर्थिक विकास, नीति निर्माण और पर्यावरणीय स्थिरता, मजबूत पद्धतिगत आधार पर निर्भर करता है। वर्तमान शैक्षणिक परिदृश्य में, पद्धतिगत प्रशिक्षण अक्सर खंडित रहता है। मानवविज्ञानी और अर्थशास्त्री अपने-अपने अनुशासन में सीमित रहते हैं, जिससे नवाचार में बाधा आती है। आरएमजी एक समर्पित अंतर-विषयक अनुसंधान पद्धति केंद्र के रूप में कार्य करेगा, जो प्रशिक्षण, नवाचार और ज्ञान के आदान-प्रदान के लिए एक साझा मंच प्रदान करेगा। आरएमजी ने संकाय सदस्यों को निरंतर प्रेरित करने के लिए कार्यशालाओं का आयोजन किया है। पांच दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई।

Dainik Jagran_11.03.2026_P. 4

प्रशिक्षण, नवाचार-ज्ञान विनिमय को बढ़ावा और शोधकर्ताओं को मिलेगा साझा मंच

आईआईएम में देश का पहला अंतरविषयक शोध पद्धति केंद्र

अच्छी खबर

रांची, विशेष संवाददाता। भारतीय प्रबंधन संस्थान, रांची (आईआईएम) ने प्रबंधन, सामाजिक विज्ञान अनुसंधान को नई दिशा देने के लिए अंतरविषयक अनुसंधान पद्धति समूह (आरएमजी) स्थापित किया है। यह भारत का पहला समर्पित अंतरविषयक शोध पद्धति केंद्र है। इसका उद्देश्य विभिन्न विषयों के शोधकर्ताओं को एक साझा मंच प्रदान करना और नवाचार को बढ़ावा देना है।

संस्थान के अनुसार सामाजिक विज्ञान में मजबूत शोध के लिए ठोस पद्धतिगत आधार जरूरी है। वर्तमान शैक्षणिक व्यवस्था में शोध पद्धतियों का प्रशिक्षण अक्सर अलग-अलग विषयों तक सीमित रहता है। इससे अंतरविषयक शोध सीमित हो जाता है। इस चुनौती को ध्यान में रखते हुए आईआईएम ने आरएमजी को एक मेथडोलॉजिकल कॉमंस के रूप में विकसित किया है। आरएमजी के तहत शोधार्थियों, शिक्षकों और प्रतिभागियों को उनके अकादमिक कार्यों में निरंतर मार्गदर्शन और प्रोत्साहन दिया जा रहा है। इस दिशा में थिंकिंग विद थ्योरी नाम की श्रृंखला शुरू की गई है। इसमें पीएचडी शोधार्थी, शिक्षक व विषय विशेषज्ञ अपने शोध और सैद्धांतिक दृष्टिकोण पेश करते हैं। अब तक इसके 10 सत्र आयोजित हो चुके हैं। शोध-शिक्षण को मजबूत करने के लिए आरएमजी की ओर से कार्यशालाएं भी आयोजित की जा रही हैं।

तीन प्रमुख आयामों पर काम करेगा केंद्र

यह केंद्र शोध पद्धतियों के दार्शनिक आधार, विधियों का एकीकरण व विश्लेषणात्मक क्षमताओं पर काम करेगा। इसमें सांख्यिकीय सॉफ्टवेयर, गुणात्मक विश्लेषण प्लेटफॉर्म, स्पेशियल व नेटवर्क विश्लेषण, बिब्लियोमेट्रिक्स और कंप्यूटेशनल मेथड्स तकनीकों पर भी प्रशिक्षण दिया जाएगा।

उभरती शोध विधियों पर सम्मेलन होंगे

इसके अलावा इस केंद्र के माध्यम से आरएमजी के तहत उन्नत शोध विधियों पर प्रशिक्षण कार्यक्रम, रिसर्च डिजाइन क्लीनिक, स्पीकर सीरीज, मेथड्स सेमिनार, शिक्षण संसाधनों का विकास और उभरती शोध विधियों पर सम्मेलन आयोजित किए जाएंगे। आरएमजी के अध्यक्ष प्रो कुशाग्र शरण ने कहा कि इस पहल का उद्देश्य शोध के प्रति उत्साह को बढ़ावा देना और वैश्विक स्तर पर पद्धतिगत विकास में नेतृत्व स्थापित करना है। उन्होंने कहा कि आरएमजी भविष्य में राष्ट्रीय स्तर के मेथड्स ट्रेनिंग नेटवर्क का प्रमुख केंद्र बनने और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक प्रतिष्ठित शोध पद्धति संस्थान के रूप में पहचान बनाने की दिशा में कार्य करेगा।

Hindustan_11.03.2026_P. 7

आइआइएम में क्रॉस-डिसिप्लिनरी रिसर्च मेथड्स ग्रुप की शुरुआत

रांची. आइआइएम रांची में क्रॉस-डिसिप्लिनरी रिसर्च मेथड्स ग्रुप की स्थापना की गयी. यह प्रबंधन अनुसंधान के क्षेत्र में विकास के लिए महत्वपूर्ण कदम है. रिसर्च मेथड्स ग्रुप एक ऐसा मंच है, जहां प्रशिक्षण, नवाचार, सहयोग व ज्ञान के आदान-प्रदान को पारंपरिक विषयगत सीमाओं से परे बढ़ावा दिया जायेगा. शोधार्थियों, शिक्षकों और प्रतिभागियों को उनके अकादमिक प्रयासों में मार्गदर्शन मिलेगा. आरएमजी तीन प्रमुख आयामों पर काम करता है.

Prabhat Khabar_11.03.2026_P. 8

आईआईएम रांची ने 'रिसर्च मेथड्स ग्रुप' की शुरुआत, शोध पद्धति को मिलेगा नया आयाम

अंतरविषयी शोध को बढ़ावा देने के लिए प्रशिक्षण, कार्यशाला और ज्ञान आदान-प्रदान का बनेगा साझा मंच

By CAMPUS BOOM March 10, 2026 CAMPUS No Comments 3 Mins Read

Campus Boom.

भारतीय प्रबंधन संस्थान (आईआईएम) रांची ने प्रबंधन और सामाजिक विज्ञान के शोध को नई दिशा देने के लिए रिसर्च मेथड्स ग्रुप (आरएमजी) की शुरुआत की है। यह पहल शोध पद्धति को मजबूत बनाने और विभिन्न विषयों के बीच सहयोग बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।

संस्थान के अनुसार सामाजिक विज्ञान में मजबूत शोध के लिए सुदृढ़ पद्धति की आवश्यकता होती है। वर्तमान शैक्षणिक व्यवस्था में शोध पद्धति का प्रशिक्षण अक्सर अलग-अलग विषयों में बंटा हुआ रहता है, जिससे अंतर्विषयी शोध की संभावनाएं सीमित हो जाती हैं। ऐसे में आरएमजी को देश के पहले समर्पित क्रॉस-डिसिप्लिनरी मंच के रूप में विकसित किया गया है, जहां शोधकर्ता प्रशिक्षण, नवाचार, सहयोग और ज्ञान के आदान-प्रदान के लिए एक साझा मंच प्राप्त करेंगे।

आरएमजी के माध्यम से शोधार्थियों, फैकल्टी और प्रतिभागियों को उनके शैक्षणिक शोध कार्यों में लगातार मार्गदर्शन और प्रोत्साहन दिया जा रहा है। इसी क्रम में "थिंकिंग विद थ्योरी" श्रृंखला शुरू की गई है, जिसमें पीएचडी शोधार्थी, फैकल्टी और विषय विशेषज्ञ अपने शोध कार्य और उससे जुड़े सिद्धांतों पर चर्चा करते हैं। अब तक इस श्रृंखला के 10 सत्र सफलतापूर्वक आयोजित किए जा चुके हैं, जिससे शोधार्थियों में आलोचनात्मक सोच और शोध पद्धति की समझ विकसित हो रही है।

इसी कड़ी में हाल ही में आरएमजी द्वारा हर्मेन्यूटिक रिसर्च मेथड पर पांच दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का संचालन प्रोफेसर अजीत एन. माथुर और प्रोफेसर सारी मटिला ने किया, जिसमें फैकल्टी सदस्य, डॉक्टोरल स्कॉलर्स और शोधकर्ताओं ने भाग लिया। कार्यशाला का उद्देश्य जटिल प्रबंधकीय और नीतिगत चुनौतियों के समाधान के लिए उन्नत व्याख्यात्मक शोध पद्धतियों की समझ विकसित करना था।

आरएमजी का लक्ष्य शोध क्षमता निर्माण और नेटवर्क विकास के लिए एक रणनीतिक रोडमैप तैयार करना है। इसके तहत शोध पद्धति के तीन प्रमुख आयामों पर कार्य किया जा रहा है, जिनमें दार्शनिक आधार, पद्धतियों का एकीकरण और विश्लेषणात्मक क्षमताओं का विकास शामिल है। इसमें सांख्यिकीय सॉफ्टवेयर, गुणात्मक विश्लेषण प्लेटफॉर्म, स्पेशल और नेटवर्क विश्लेषण, टेक्स्ट माइनिंग, बिब्लियोमेट्रिक्स और कम्प्यूटेशनल पद्धतियों को भी शामिल किया गया है।

इसके अलावा उन्नत शोध पद्धतियों पर कार्यशालाएं, रिसर्च डिजाइन क्लीनिक, स्पीकर सीरीज, शिक्षण सामग्री का विकास, सहयोगी शोध परियोजनाएं और उभरती शोध विधियों पर सम्मेलन भी आयोजित किए जाएंगे।

आरएमजी के चेयरपर्सन प्रो. कुशाग्र शरण ने कहा कि इस पहल का उद्देश्य शोध के प्रति उत्साह को बढ़ावा देना, अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के साथ साझेदारी के माध्यम से वैश्विक स्तर पर शोध पद्धति के विकास में नेतृत्व करना और भारत में राष्ट्रीय स्तर का मेथड्स ट्रेनिंग नेटवर्क स्थापित करना है। उन्होंने कहा कि आरएमजी का लक्ष्य इसे एक ऐसे अंतरराष्ट्रीय स्तर के केंद्र के रूप में विकसित करना है, जहां से जटिल सामाजिक और पर्यावरणीय चुनौतियों पर शोध के लिए नई पद्धतियां विकसित की जा सकें।